फिर किरण है लौट आई

उदित होते ही जिसे भेजा तुम्हारे पास था
पार करना जिसे अगणित योजनों आकाश था
मम हृदय उत्थित तुम्हारे लिए शुभ संदेश था
भावना ने ही धरा ज्यों रश्मि का शुभ वेष था ।।1।।

बंद पाए द्वार आशा निराशा ने थी हरायी
फिर किरण है लौट आई

पूर्व में पाता जलांजलि, स्वागतों के स्तोत्र सुनता
जन नमन से मोद पाता पुष्पचय से गंध चुनता
जीवजगमानस समुत्थित मोद अर्णव में नहाता
तब प्रभा की हेमधारा पूर्व से था मैं लुटाता ।।2।।

कमल हंसते और पड़ते गीत खगगण के सुनाई
फिर किरण है लौट आई

अब सभी को है लुभाता यामिनी का मदिर यौवन
तप्त सांसें अलस लोचन और वपु की तीव्र थिरकन
तरुणता वारुणि समुद्धत शर्वरी का कृष्ण आंचल
सुदृढ़तर परिरंभ, लय से विलग गायन गात्र मांसल ।।3।।

अब न स्वागत अंशु का है जगत लेता है जम्हाई
फिर किरण है लौट आई

मात्र काम्य निशीथ अब है निशाकर तक है उपेक्षित
रम्य राका थी कभी, अब तम प्रसारण है अपेक्षित
मात्र बाधा डालता सा लग रहा जग को प्रभाकर
क्या मिलेगा सुप्त तंद्रित या मदालस को जगाकर ।।4।।

हुई जागृति वृद्ध निद्रा दीखती है तरुण भाई
फिर किरण है लौट आई

किंतु मैं हूं विवश सकता बदल क्या निज प्रकृति को
भूल जाता तात सत्वर शठाचारित निकृति को
अनघता का सतत रक्षण और कृंतन विकृति का
सदा ही कर्तव्य, मैं आदर्श हूं तप सुधृति का ।।5।।

कर रहा आलोक विसरण हो न हो जग में बड़ाई
फिर किरण है लौट आई

मत करो स्वागत उषा के साथ फिर भी मैं खड़ा हूं
अरुण हैं सारथि, तरस्वी सप्तहयरथ पर चढ़ा हूं
सकल पादप जगत खगगण आज भी स्वागत हमारा
कर रहे हैं, रहें सोते, जिन्हें प्रिय है तिमिरकारा ।।6।।

हम तमोहर हैं, रहेंगे, भले हो लंबी लड़ाई
फिर किरण है लौट आई

स्थान: जबलपुर
दिनांक 13.01.2015

शिव कुमार मिश्र